अनुप्रास अलंकार

परिभाषा :–

जहाँ समान वर्णों की बार-बार आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

Ex –

रघुपति राघव राजा राम।
पतित पावन सीता राम॥

स्पष्टीकरण — उपर्युक्त उदाहरण की प्रथम पंक्ति में 'र' वर्ण की तथा द्वितीय पंक्ति में 'प' वर्ण की आवृत्ति के कारण यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

अनुप्रास के भेद

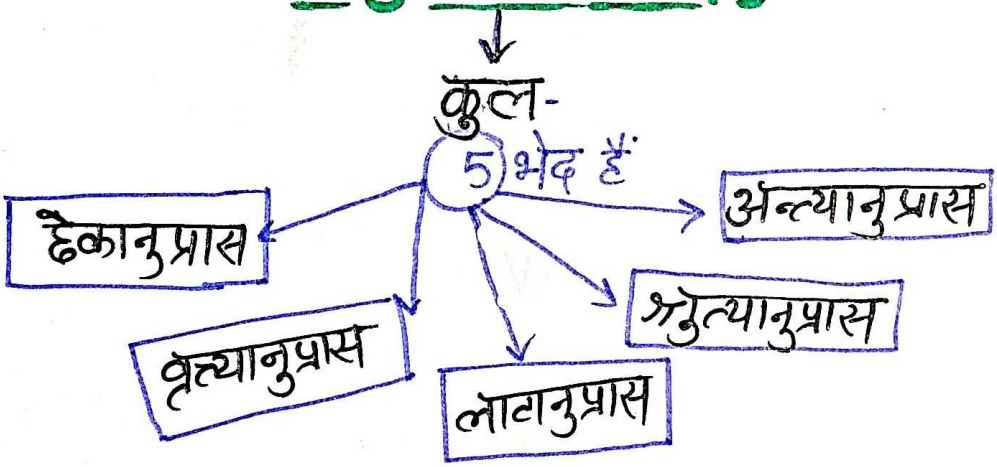

1. छेकानुप्रास

परिभाषा – जहाँ एक वर्ण की आवृत्ति केवल एक ही बार हो।

Ex - कहत कत परदेशी की बात।

"रीझि-रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठै।
साँसै भरि आँसू भरि कहत दई दई॥"

"इस करुणा कलित हृदय में
क्यों विकल रागिनी बजती।"

2. वृत्त्यानुप्रास

परिभाषा – जहाँ एक ही वर्ण की आवृत्ति दो या दो से अधिक बार हो।

Ex. तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।

or

कारी कूर कोकिला कहाँ को बैर काढ़ति री॥

कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि,
कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि ॥

3. श्रुत्यनुप्रास

परिभाषा :—

जहाँ कण्ठ तालु दन्त आदि एक ही स्थान से उच्चरित होने वाले वर्णों की आवृत्ति हो।

Ex -

तुलसीदास सीदति निसिदिन
देखत तुम्हारि निठुराई ॥"

or.

Gyansindhu Coaching Classes

"तेही निसि सीता पहुँ जाई।
त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई॥"
"दिनान्त था, थे दिननाथ डूबते।
सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे॥"

४. लाटानुप्रास

परिभाषा —

जहाँ एकार्थक शब्दों की आवृत्ति हो तथा अन्वय करने पर अर्थ अलग हो जाए।

Ex - पूत कपूत, तो क्यों धन संचय ?
पूत सपूत, तो क्यों धन संचय ?

"राम भजन जो करत नहिं, भव बंधन भय ताहि।
राम भजन जो करत नहिं भव बंधन भय ताहि॥"

५. अन्त्यानुप्रास

परिभाषा :- जहाँ शब्दों के अन्त में वर्णों की आवृत्ति हो।

Ex -

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।

or

कहत नटत रीझत खीझत,
मिलत खिलत लजियात।

"उसे देखा तो यह जाना सनम
प्यार होता है दीवाना सनम ॥"

आपका आना, दिल धड़काना
मेंहदी लगा के यूँ शरमाना ।

यमक अलंकार

परिभाषा –

यमक → अर्थ → युग्म/जोड़ा

जहाँ एक शब्द अथवा शब्द-समूह का एक से अधिक बार प्रयोग हो परन्तु अर्थ अलग-अलग हो वहाँ पर यमक अलंकार होता है।

Example –

ऊँचे घोर मंदर के अन्दर रहनवारी
ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।

स्पष्टीकरण – 'ऊँचे घोर मंदर' वाक्य का दो बार प्रयोग हुआ है परन्तु दोनों का अर्थ भिन्न है।

मंदर → महल
मंदर → पर्वत कदराएँ

इसलिए यमक अलंकार है।

अन्य उदाहरण:–

"कनक- कनक ते सौ गुनी
मादकता अधिकाय।
वा पाए बौराय जग, वा खाए
बौराय ॥"

or.

"इकली डरी हौं, घन देखि के डरी हौं,
खाय बिष की डरी हौं घनस्याम मरि
जाइहौं ॥"

डरी → पड़ी, भयभीत, डली/टुकड़ा।

काली घटा का घमंड घटा
नभ मण्डल तारक वृंद खिले ||

घटा → काले बादल
→ कम हुआ |

भजन

"माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर |
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर ||"

मनका → आत्मा/मन का
→ कण्ठ के माला का मनका

श्लेष अलंकार

परिभाषा — श्लिष्ट → चिपका हुआ।

जब एक शब्द का एक ही बार प्रयोग हो तथा अर्थ दो या दो से अधिक हों तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

Ex —

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून॥

पानी → ③ अर्थ → चमक/तेज — मोती के पक्ष में।
प्रतिष्ठा — मनुष्य " "।
जल — चूने " "।

Or

चरन धरत चिंता करत, चितवत चारिउ ओर।
सुबरन को खोजत फिरत, कवि व्यभिचारी चोर॥

सुबरन → ① सुवर्ण — सुन्दर अक्षर — कवि के पक्ष में।
→ ② सुवर्णा नारी — व्यभिचारी के पक्ष में।
→ ③ सोना — चोर के पक्ष में।

"चिर जीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर॥"